

पाठ 7 रवींद्रनाथ ठाकुर (आत्मत्राण)

रवींद्रनाथ ठाकुर: जीवन परिचय

प्रारंभिक जीवन और पारिवारिक पृष्ठभूमि

रवींद्रनाथ ठाकुर, जिन्हें विश्वभारती के जनक और बंगाली पुनर्जागरण के अग्रदूत के रूप में जाना जाता है, का जन्म 7 मई 1861 को पश्चिम बंगाल के कोलकाता शहर में हुआ था। वे एक संपन्न और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध परिवार में जन्मे, जहाँ विद्या, कला, संगीत और आध्यात्मिकता का वातावरण था। उनके पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर ब्रह्म समाज के एक प्रतिष्ठित नेता थे और माँ शारदा देवी एक धार्मिक प्रवृत्त की महिला थीं।

ठाकुर परिवार बंगाल के नवजागरण काल के केंद्र में था। इस परिवार ने भारतीय साहित्य, संगीत, चित्रकला और समाज सुधार में गहरी भूमिका निभाई। रवींद्रनाथ की परवरिश इसी वातावरण में हुई, जिसने उनके व्यक्तित्व और रचनात्मकता को प्रारंभिक दिशा दी।

शिक्षा और प्रारंभिक बौद्धिक विकास

रवींद्रनाथ की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। पारंपरिक स्कूल शिक्षा की अपेक्षा उन्होंने स्वतंत्र अध्ययन को अधिक महत्व दिया। उनके पिता उन्हें विभिन्न विषयों का अध्ययन कराते थे, जिनमें बंगाली, संस्कृत, अंग्रेजी साहित्य, संगीत और कला प्रमुख थे।

बाद में उन्हें बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैंड भेजा गया, लेकिन वे वहाँ की औपचारिक शिक्षा से अधिक प्रभावित नहीं हुए। लंदन विश्व विद्यालय में अध्ययन करते हुए भी वे पश्चिमी साहित्य और दर्शन में रुचि लेने लगे। लेकिन परीक्षा दिए बिना ही वे भारत लौट आए और साहित्य, कला और समाज सेवा के क्षेत्र में समर्पित हो गए।

साहित्यिक यात्रा की शुरुआत

रवींद्रनाथ ठाकुर ने मात्र आठ वर्ष की उम्र में कविता लिखनी शुरू कर दी थी। सन् 1877 में उन्होंने अपनी पहली लंबी कविता 'भखारिणी' प्रकाशित की, जिसे पाठकों ने अत्यधिक सराहा। धीरे-धीरे वे बंगाली साहित्य के एक प्रमुख हस्ताक्षर बन गए।

उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति, लोक परंपराएं, प्रकृति और मानव जीवन की संवेदनाएं प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक और गीत के माध्यम से साहित्य की हर विधा में योगदान दिया।

गीतांजलि और नोबेल पुरस्कार

रवींद्रनाथ ठाकुर की सबसे प्रसिद्ध काव्य रचना 'गीतांजलि' है, जिसका अंग्रेजी अनुवाद स्वयं उन्होंने किया। गीतों के इस संग्रह में मानव और ईश्वर के बीच आध्यात्मिक संबंधों को अभिव्यक्त किया गया है।

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

1913 में गीतांजल के लिए उन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया, जिससे वे नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले एशियाई और पहले भारतीय बन गए। यह उपलब्धि भारतीय साहित्य के लिए ऐतिहासिक थी और इससे भारतीय संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान मिली।

रचनात्मक वृद्धि और योगदान

रवींद्रनाथ ठाकुर की साहित्यिक प्रतिभा बहुआयामी थी। उन्होंने लगभग 1000 कवितायें, 2000 से अधिक गीत, कई उपन्यास, नाटक, कहानियाँ और निबंध लिखे। उनकी रचनाओं में मनुष्य और प्रकृति के बीच गहरे संबंध, सामाजिक चेतना, राष्ट्रप्रेम, आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्यों की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है।

उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं:

- नैवेद्य
- पूरबी
- क्षणिका
- बालाका
- चित्रा
- सांध्यगीत

प्रसिद्ध कहानियाँ:

- काबुलीवाला
- पोस्टमास्टर
- नास्तिक
- छुट्टी
- दृष्टिदान

प्रमुख उपन्यास:

- गोराम
- घरे बाइरे
- चरित्रहीन
- नौकाडुबी

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

इनके नाटकों में भी सामाजिक मुद्दों को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया है, जैसे 'डाकघर', 'चंडा लका' और 'रक्तकरबी'।

रवींद्र संगीत: संगीत में नवजागरण

रवींद्रनाथ ठाकुर ने लगभग 2000 से अधिक गीतों की रचना की, जिन्हें 'रवींद्र संगीत' के नाम से जाना जाता है। इन गीतों में प्रेम, प्रकृति, भक्ति और राष्ट्रवाद के स्वर गूंजते हैं।

इन गीतों में भावनाओं की गहराई, संगीत की मधुरता और शब्दों की आत्मा देखने को मिलती है। रवींद्र संगीत बंगाली संस्कृति का अभिन्न अंग बन चुका है और आज भी संगीत प्रेमियों में इसकी विशेष पहचान है।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

रवींद्रनाथ ने शिक्षा को रटत प्रणाली से मुक्त कर स्वतंत्र सोच और रचनात्मकता से जोड़ने पर बल दिया। इसी वचार के तहत उन्होंने शांतिनिकेतन की स्थापना की, जो आगे चलकर विश्वभारती विश्व विद्यालय बना।

शांतिनिकेतन में शिक्षा और कला का संगम था। यहाँ विद्यार्थी प्रकृति की गोद में रहकर ज्ञान प्राप्त करते थे। इस संस्थान में भारतीय परंपरा और पश्चिमी आधुनिकता का समन्वय हुआ। आज भी यह स्थान शिक्षा और संस्कृति का अंतरराष्ट्रीय केंद्र बना हुआ है।

सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण

रवींद्रनाथ ठाकुर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समर्थक थे, लेकिन उनका मार्ग अहिंसात्मक और सांस्कृतिक जागरूकता पर आधारित था। उन्होंने कभी सशस्त्र राजनीति नहीं की, लेकिन अपने लेखन से जनचेतना को प्रभावित किया।

1919 के जलियाँवाला बाग हत्याकांड के विरोध में उन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त 'नाइटहुड' की उपाधि लौटा दी। यह उनके नैतिक और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को दर्शाता है।

उन्होंने महात्मा गांधी के आंदोलनों का समर्थन किया, लेकिन वे आत्मबल और आत्मबोध के पक्षधर रहे। उनका विश्वास था कि भारत को आत्मनिर्भर बनने के लिए शिक्षा, संस्कृति और चरित्र की आवश्यकता है।

दर्शन और आध्यात्मिक वचार

रवींद्रनाथ ठाकुर का दर्शन मानवीय और आध्यात्मिक था। वे ब्रह्म समाज से प्रभावित थे, लेकिन उन्होंने धर्म को संकीर्णता और पाखंड से मुक्त करने की कोशिश की। उनका मानना था कि ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति के भीतर है और उसे बाहरी पूजाओं में नहीं, आत्मा के भीतर खोजा जाना चाहिए।

उनकी कविता और दर्शन में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना गूंजती है। उन्होंने जीवन, मृत्यु, प्रेम, ईश्वर, प्रकृति और आत्मा पर गहन वचार प्रस्तुत किए हैं।

अंतरराष्ट्रीय यात्राएँ और संवाद

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

रवींद्रनाथ ठाकुर ने विश्व के कई देशों की यात्राएँ कीं और भारत की संस्कृति को विश्व स्तर पर प्रस्तुत किया। उन्होंने यूरोप, अमेरिका, जापान, चीन, रूस, इंडोनेशिया और श्रीलंका की यात्राएँ कीं।

इन यात्राओं के दौरान वे अनेक दार्शनिकों, लेखकों और राष्ट्राध्यक्षों से मिले। उन्होंने भारत की सांस्कृतिक पहचान को मजबूती से रखा और सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा दिया। उनकी यात्राएँ केवल प्रचार के लिए नहीं थीं, बल्कि एक वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करने का माध्यम थीं।

रवींद्रनाथ ठाकुर की वरासत

रवींद्रनाथ ठाकुर की वरासत बहुआयामी है। वे न केवल एक महान साहित्यकार थे, बल्कि एक विचारक, शिक्षादाता, कलाकार, संगीतज्ञ और समाज सुधारक भी थे। उनकी कृतियों ने भारतीय साहित्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाई।

उनके द्वारा रचित दो गीत आज भी भारत और बांग्लादेश के राष्ट्रीय गान के रूप में गाए जाते हैं — भारत का “जन गण मन” और बांग्लादेश का “आमार शोनार बांग्ला”।

यह अपने-आप में उनकी सांस्कृतिक महत्ता का प्रमाण है।

निधन और स्मृति

7 अगस्त 1941 को रवींद्रनाथ ठाकुर का निधन हुआ, लेकिन उनकी रचनाएँ आज भी जीवन्त हैं। उनकी स्मृति में हर साल ‘रवींद्र जयंती’ मनाई जाती है और उनकी शिक्षाओं को सम्मानपूर्वक याद किया जाता है।

उनके विचार, उनकी कविताएँ, कहानियाँ और गीत आज भी युवाओं को प्रेरणा देते हैं। वे न केवल बंगाल बल्कि पूरे भारत और विश्व के सांस्कृतिक इतिहास का अमूल्य हिस्सा हैं।

निष्कर्ष

रवींद्रनाथ ठाकुर केवल एक साहित्यकार नहीं, बल्कि भारत के सांस्कृतिक गौरव थे। उन्होंने साहित्य, संगीत, कला, शिक्षा और समाज में जो योगदान दिया, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक बना रहेगा।

उनकी सोच में आधुनिकता और परंपरा का अद्भुत संतुलन था। ‘गीतांजलि’ में उनकी आत्मा बोलती है, ‘शांतिनिकेतन’ में उनका सपना साकार होता है और ‘जन गण मन’ में राष्ट्र की भावना धड़कती है।

प्रश्न - अभ्यास:

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1. कवि कससे और क्या प्रार्थना कर रहा है?

उत्तर 1:

(i) भगवान से प्रार्थना: कवि भगवान पर गहरी आस्था रखने वाला व्यक्ति है। वह मानता है कि ईश्वर

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

सर्वशक्तिमान और करुणामय हैं। ईश्वर हर कार्य करने में सक्षम हैं और उनकी शक्ति पर क व का पूर्ण विश्वास है। इस लए, क व भगवान से प्रार्थना करता है।

(ii) क व की प्रार्थना: क व यह मानता है क भगवान सभी कार्य कर सकते हैं, ले कन वह उनसे हर काम के लए प्रार्थना नहीं करता। क व भगवान से यह निवेदन करता है क वे उसे अपनी समस्याओं का सामना करने और अपने कार्य स्वयं करने की शक्ति प्रदान करें। क व का यह दृष्टिकोण आत्मनिर्भरता और साहस को बढ़ावा देता है।

प्रश्न 2. ' वपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं' - क व इस पंक्ति के द्वारा क्या कहना चाहता है?

उत्तर: 2

(1) वप तयों से बचाने की प्रार्थना नहीं:

सामान्यतः लोग भगवान से अपने दुःखों को दूर करने की प्रार्थना करते हैं, ले कन इस क व की प्रार्थना उससे अलग है। क व भगवान से यह नहीं कहता क वह उसे दुःख और वप तयों से बचाए। वह समझता है क जीवन में सुख और दुःख दोनों का अपना महत्व है। सुख का असली मूल्य तभी समझा जा सकता है, जब जीवन में दुःख का अनुभव हो।

(2) वप तयों का सामना करने की शक्ति:

क व भगवान से यह प्रार्थना करता है क उसे ऐसी शक्ति मले जिससे वह आने वाली वप तयों से भयभीत न हो। वह चाहता है क वह उन वप तयों का सामना हिम्मत और मुस्कान के साथ करे और संघर्ष करते हुए उनसे बाहर निकलने का रास्ता खोज सके।

यह दृष्टिकोण पाठकों को प्रेरणा देता है क जीवन में आने वाली कठिनाइयों को एक अवसर के रूप में देखें और उनसे सीख लेकर अपने व्यक्तित्व को और सशक्त बनाएं।

प्रश्न 3. क व सहायक के न मलने पर क्या प्रार्थना करता है?

उत्तर 3:

(i) जीवन में सहायता की आवश्यकता – आमतौर पर मनुष्य अपने कार्यों को पूरा करने के लए दूसरों की सहायता पर निर्भर होता है। ले कन क व यह मानता है क कसी और पर निर्भर रहना उचित नहीं है, क्योंकि क इससे व्यक्ति पराधीन हो जाता है।

(ii) स्वयं पर विश्वास – क व का मानना है क मनुष्य को अपनी क्षमता और शक्ति पर विश्वास होना चाहिए। वह भगवान से प्रार्थना करता है क अगर जीवन में कभी उसे कोई सहायक न मले, तो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उसका साहस और आत्मबल कमजोर न पड़े। वह अपनी ताकत और आत्म विश्वास के सहारे सभी चुनौतियों का सामना कर सके।

प्रश्न 4. अंत में क व क्या अनुनय करता है?

उत्तर 4:

(i) समस्याओं का भार: क व भगवान से निवेदन करता है क वह अपने जीवन की समस्याओं का भार कम

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

करने की प्रार्थना नहीं करता। बल्कि, उसकी यह प्रार्थना है क उसे इतनी शक्ति मले क वह अपनी समस्याओं को खुद संभाल सके।

(ii) सुख के दिन: क व भगवान से यह प्रार्थना करता है क जब उसके जीवन में सुखद क्षण आएँ, तब भी वह भगवान को हमेशा याद करता रहे। आमतौर पर लोग कठिनाइयों के समय भगवान को याद करते हैं, ले कन सुख में उन्हें भूल जाते हैं। क व चाहता है क वह सुख के पलों में भी भगवान को अ धक श्रद्धा और भक्ति के साथ स्मरण करे।

प्रश्न 5. 'आत्मत्राण' शीर्षक की सार्थकता क वता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 5:

1. 'आत्मत्राण' का अर्थ और संदर्भ:

'आत्मत्राण' का शाब्दिक अर्थ है आत्मरक्षा या स्वयं की सुरक्षा। इस क वता में क व ने आत्मरक्षा की भावना को मुख्य वषय बनाया है। ले कन यह आत्मरक्षा पारंपरिक प्रार्थना के माध्यम से नहीं है, बल्कि स्वयं की क्षमता और संकल्प के आधार पर है।

2. क व का संदेश:

क व यह संदेश देता है क इंसान अक्सर अपने हितों और समस्याओं के समाधान के लए ईश्वर पर निर्भर रहता है। इस निर्भरता के कारण उसकी अपनी स क्रयता और आत्म वश्वास कमजोर हो जाती है। क व इस पर निर्भरता से बचने की बात करता है और प्रार्थना करता है क ईश्वर उसे इतनी शक्ति दे क वह अपने संकटों का सामना स्वयं कर सके।

3. प्रेरणा और शक्षा:

यह क वता हमें आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाती है। क व चाहते हैं क इंसान अपने कार्य और चुनौतियों को स्वयं संभालने की क्षमता वक सत करे, क्योंकि क यही सच्ची आत्मरक्षा है।

इस प्रकार, 'आत्मत्राण' शीर्षक क वता की भावनाओं और संदेश को प्रभावी ढंग से दर्शाता है।

प्रश्न 6. अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लए आप प्रार्थना के अतिरिक्त और क्या-क्या प्रयास करते हैं? ल खए।

उत्तर 6:

(i) प्रार्थना का महत्व:

प्रार्थना का जीवन में वशेष महत्व है। हालां क, यह धारणा गलत है क प्रार्थना केवल इच्छाओं को पूरा करने के लए की जाती है। यदि केवल प्रार्थना से ही इच्छाएं पूरी हो जाएँ, तो मनुष्य को कसी प्रयास की आवश्यकता ही नहीं होगी। वह ईश्वर से प्रार्थना करेगा और निश्चिंत होकर आराम करेगा। ले कन ऐसा संभव नहीं है।

(ii) कठोर परिश्रम:

अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लए कठोर परिश्रम आवश्यक है। प्रार्थना हमें शक्ति और मनोबल प्रदान करती है, ले कन सफलता केवल मेहनत से ही मलती है। प्रार्थना और परिश्रम का मेल ही कसी भी लक्ष्य को प्राप्त

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

करने का सही रास्ता है। इस लए, अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लए ईश्वर से सहायता मांगने के साथ-साथ कड़ी मेहनत करना भी जरूरी है।

प्रश्न 7. क्या क व की यह प्रार्थना आपको अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है? यदि हाँ, तो कैसे?

उत्तर 7:

(i) आमतौर पर प्रार्थनाएँ समाज और जनजीवन में दुखों और कष्टों से मुक्ति के लए की जाती हैं। लोग भगवान से अपने संकटों को दूर करने और सुख-शांति की कामना करते हैं, चाहे वह पूजा स्थलों पर हो या अन्यत्र।

(ii) इस क वता में क व की प्रार्थना अलग है। क व भगवान से अपने दुखों को दूर करने की याचना नहीं करता, बल्कि वह उनसे यह प्रार्थना करता है क उसे इन कठिनाइयों से लड़ने की शक्ति मले। यह प्रार्थना साहस और सहनशीलता की मांग करती है। क व दुखों का स्वागत करता है, जब क आम प्रार्थनाओं में दुखों से मुक्ति पाने की कामना की जाती है।

(ख) निम्न ल खत अंशों का भाव स्पष्ट कीजिए-

1. नत शर होकर सुख के दिन में

तव मुख पहचानूँ छिन छिन में।

उत्तर 1: भावार्थ:

क व यहाँ वनम्रता और आभार व्यक्त कर रहे हैं। वह कह रहे हैं क जब उनके जीवन में सुख के दिन आएँ, तब भी वे अ भमान में न पड़ें। वे सर झुका कर, यानी वनम्र होकर, हर पल ईश्वर (या कसी उच्चतर शक्ति) के मुख का स्मरण करते रहें और उन्हें पहचानते रहें। यह आत्म-अ भमान छोड़कर कृतज्ञता और वनम्रता बनाए रखने की सीख देता है।

2. हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही

तो भी मन में ना मानूँ क्षय ।

उत्तर 2: भावार्थ:

यहाँ क व जीवन में आने वाली हानियों और कठिनाइयों के प्रति धैर्य की भावना व्यक्त कर रहे हैं। वे कहते हैं क यदि उन्हें संसार में कोई हानि उठानी भी पड़े और लाभ के स्थान पर केवल वंचना ही मले, तो भी वे अपने मन को गरने नहीं देंगे। क व हर परिस्थिति में मान सक संतुलन बनाए रखने और असफलता से वच लत न होने की प्रेरणा दे रहे हैं।

3. तरने की हो शक्ति अनामय

मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही ।

उत्तर 3: भावार्थ:

यहाँ क व उस आत्मबल और सहनशक्ति की कामना कर रहे हैं, जो उन्हें जीवन की कठिन परिस्थितियों से पार पाने में मदद करे। वे कहते हैं क अगर उनका बोझ हल्का करने के लए सांत्वना (सहानुभूति) न भी दी जाए,

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

तो भी वे संतुष्ट हैं, बशर्ते उन्हें अपने संघर्षों को पार करने की शक्ति और साहस मल जाए। क व यह दिखाते हैं क वे कसी सांत्वना की अपेक्षा नहीं रखते, बल्कि अपनी आंतरिक शक्ति पर भरोसा करना चाहते हैं।

योग्यता वस्तार

प्रश्न 1. रवींद्रनाथ ठाकुर ने अनेक गीतों की रचना की है। उनके गीत-संग्रह में से दो गीत छाँटिए और कक्षा में क वता-पाठ कीजिए।

उत्तर 1- रवींद्रनाथ ठाकुर (टैगोर) ने अपने साहित्यिक जीवन में कई सुंदर और हृदयस्पर्शी गीतों की रचना की है। उनके गीत-संग्रह 'गीतांज ल' ने उन्हें वश प्र सद् ध दिलाई और नोबेल पुरस्कार भी प्रदान कया। नीचे उनके दो प्र सद् ध गीत दिए गए हैं, जिन्हें आप कक्षा में प्रस्तुत कर सकते हैं:

1. जन गण मन (राष्ट्रीय गान)

यह गीत भारत का राष्ट्रीय गान है, जो उनकी महान रचना का हिस्सा है। इसका पहला पद:

जन गण मन अ धनायक जय हे,
भारत भाग्य वधाता।
पंजाब, संध, गुजरात, मराठा,
द्रा वड, उत्कल, बंगा।
वन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जल ध तरंगा।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशीष मांगे।
गाहे तव जयगाथा।
जन गण मंगल दायक जय हे,
भारत भाग्य वधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय जय जय जय हे!

2. तु म संगीतो (बंगाली गीत)

यह गीत रवींद्र संगीत के अंतर्गत आता है। यह ईश्वर और आत्मा के गहरे संबंध को उजागर करता है। इसके भावार्थ को हिंदी में प्रस्तुत कया जा सकता है:

तुम ही संगीत हो,
तुम ही मेरे जीवन का स्वर।
तुम्हारे बिना मेरी धुन अधूरी है,
जैसे फूल बिना सुगंध के।

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

आप इन गीतों का चयन कर उनकी प्रस्तुति के साथ गीत के अर्थ और भावनाओं को कक्षा में समझा सकते हैं। यह साहित्यिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से प्रभावी होगा।

प्रश्न 2. अनेक अन्य कवियों ने भी प्रार्थना गीत लखे हैं, उन्हें पढ़ने का प्रयास कीजिए; जैसे-

(क) महादेवी वर्मा क्या पूजा क्या अर्चन रे!

(ख) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला-द लत जन पर करो करुणा ।

(ग) इतनी शक्ति हमें देना दाता मन का वश्वास कमजोर हो न हम चलें नेक रस्ते पर हम से भूल कर भी कोई भूल हो न

इस प्रार्थना को ढूँढकर पूरा पढ़िए और समझिए कि दोनों प्रार्थनाओं में क्या समानता है? क्या आपको दोनों में कोई अंतर भी प्रतीत होता है। इस पर आपस में चर्चा कीजिए ।

उत्तर 2: दिए गए तीन उदाहरणों में प्रार्थना गीतों की व भन्न भावनाओं और वचारों का निरूपण क्या गया है। आइए हम प्रत्येक को समझने का प्रयास करते हैं:

1. महादेवी वर्मा का "क्या पूजा क्या अर्चन रे!"

इस कविता में महादेवी वर्मा ने पूजा और अर्चन के पारंपरिक रूपों पर सवाल उठाया है। वे यह कहती हैं कि सच्ची पूजा तो मन की पवित्रता और प्रेम में निहित है, न कि बाहरी कर्मकांडों में। यह प्रार्थना हमें आंतरिक सत्य और भावनाओं की ओर प्रेरित करती है।

2. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का "द लत जन पर करो करुणा"

इस प्रार्थना में निराला ने समाज के दलित और उत्पीड़ित वर्ग के प्रति करुणा का आग्रह किया है। यह प्रार्थना सामाजिक न्याय और समानता की ओर एक संकेत देती है, जहां कि व ईश्वर से दलितों के प्रति करुणा की अपील करते हैं, ताकि समाज में न्याय और समानता हो सके।

3. "इतनी शक्ति हमें देना दाता"

यह प्रार्थना हमें मानसिक और आत्मिक शक्ति की आवश्यकता की याद दिलाती है। इसमें दुआ की जा रही है कि हम वश्वास और आत्मबल के साथ अपने मार्ग पर चलें, और हमारी कमजोरियाँ हमें गलत राह पर न ले जाएं। इस प्रार्थना में भक्ति और आस्था का गहरा संदेश है।

समानताएँ:

- ईश्वर से प्रार्थना: सभी प्रार्थनाएँ ईश्वर से आशीर्वाद और करुणा की मांग करती हैं। इन प्रार्थनाओं में ईश्वर से कुछ विशेष इच्छाएँ या आशीर्वाद की उम्मीद की जाती है, जैसे कि मानसिक शक्ति, करुणा, या आंतरिक शुद्धता।
- आध्यात्मिकता: तीनों कवियों की प्रार्थनाएँ हमें आंतरिक शुद्धता, सामाजिक करुणा और आत्म वश्वास के महत्व को समझाती हैं।

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

- सामाजिक और व्यक्तिगत सुधार: हर क वता में सामाजिक और व्यक्तिगत सुधार की भावना निहित है। महादेवी वर्मा आंतरिक शुद्धता की बात करती हैं, निराला सामाजिक करुणा की और तीसरी प्रार्थना आत्म वश्वास की बात करती है।

अंतर:

- भावना की प्रकृति: महादेवी वर्मा की प्रार्थना आत्मिक शुद्धता और व्यक्तिगत पूजा की ओर अग्रसर है, जब क निराला की प्रार्थना सामाजिक करुणा पर आधारित है। "इतनी शक्ति हमें देना दाता" में व्यक्तिगत आत्म वश्वास और शक्ति की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।
- उद्देश्य: महादेवी वर्मा का ध्यान आंतरिक पूजा पर है, निराला का ध्यान समाज में न्याय और समानता पर है, और तीसरी प्रार्थना का उद्देश्य आत्म वश्वास और मान सक बल प्रदान करना है।

इस प्रकार, इन प्रार्थनाओं में समानता यह है क सभी में ईश्वर से आशीर्वाद की प्रार्थना की जा रही है, ले कन अंतर उनकी भावनाओं और उद्देश्य में है।

परियोजना कार्य

1. रवींद्रनाथ ठाकुर को नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय होने का गौरव प्राप्त है। उनके वषय में और जानकारी एकत्र कर परियोजना पुस्तिका में ल खए।

उत्तर 1- रवींद्रनाथ ठाकुर, जिन्हें रवींद्रनाथ ठाकुर या टैगोर के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय साहित्य, संगीत, कला और संस्कृति के महान हस्ताक्षर थे। वह 7 मई 1861 को कोलकाता में जन्मे थे। रवींद्रनाथ ठाकुर को वश्वभर में उनके साहित्यिक योगदान के लए जाना जाता है। वह पहले भारतीय थे जिन्होंने 1913 में साहित्य के लए नोबेल पुरस्कार प्राप्त कया।

रवींद्रनाथ टैगोर के प्रमुख योगदान:

1. काव्य और साहित्य:

- रवींद्रनाथ टैगोर ने बांग्ला साहित्य को एक नया दिशा दी। उनकी क वता और साहित्य ने भारतीय समाज को गहरे प्रभाव में डाला।
- उनके काव्य संग्रह "गीतांज ल" (Gitanjali) को वश्वभर में सराहा गया। इस काव्य संग्रह के कारण उन्हें नोबेल पुरस्कार मला।

2. रवींद्र संगीत:

- टैगोर को रवींद्र संगीत के जनक के रूप में माना जाता है। उन्होंने बांग्ला संगीत में नई धारा डाली और भारतीय संगीत में पश्चिमी संगीत के तत्वों को सामंजस्यपूर्ण तरीके से जोड़ा।

3. शक्षा:

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

- टैगोर ने शांति निकेतन की स्थापना की, जहां शिक्षा का उद्देश्य वद्या र्थियों को प्राकृतिक परिवेश में और अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ना था।
- उनका वश्वास था क शिक्षा केवल कताबों तक सी मत नहीं होनी चाहिए, बल्कि बच्चों को स्वतंत्र रूप से सोचने और अपने सृजनात्मक कौशल को वक सत करने के अवसर मलना चाहिए।

4. राष्ट्रीयता और समाज सुधार:

- रवींद्रनाथ टैगोर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी स क्रय थे। हालां क, वह अहिंसा के प्रबल पक्षधर थे और उनका दृष्टिकोण सांस्कृतिक और शांति की ओर था।
- उनका वश्वास था क भारतीय समाज को अपनी सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर की पहचान करना चाहिए, और वे अंग्रेजी शासन के खलाफ भारतीयों के आत्मसम्मान की पुनःस्थापना की आवश्यकता महसूस करते थे।

5. प्रमुख कृतियाँ:

- गीतांज ल (Gitanjali)
- नाथवेर पाठ (Naathera Paath)
- वसुंधरा (Vasundhara)
- रवींद्र रचनावली (Ravindra Rachnavali)

रवींद्रनाथ टैगोर का नोबेल पुरस्कार:

रवींद्रनाथ टैगोर को 1913 में उनकी काव्य कृति गीतांज ल के लए साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। वह पहले गैर-यूरोपीय लेखक थे जिन्हें यह पुरस्कार मला, और यह भारतीय साहित्य के लए एक ऐतिहा सक क्षण था।

रवींद्रनाथ टैगोर का योगदान भारतीय और वैश्विक साहित्य में अमूल्य है। उनका जीवन और कार्य आज भी दुनिया भर के लोगों को प्रेरणा देता है।

2. रवींद्रनाथ ठाकुर की 'गीतांज ल' को पुस्तकालय से लेकर पढ़िए।

उत्तर 2- (छात्र स्वयं करें।) आप इस काव्य संग्रह को अपने नजदीकी पुस्तकालय से लेकर पढ़ सकते हैं

रवींद्रनाथ ठाकुर (रवींद्रनाथ ठाकुर) की 'गीतांज ल' एक अत्यंत प्र सद्ध काव्य संग्रह है, जिसे रवींद्रनाथ ठाकुर ने 1910 में बांग्ला में लखा था और इसके बाद इसका अंग्रेजी में अनुवाद कया। 'गीतांज ल' का अर्थ है "गीतों का भेंट" या "गीतों का अर्पण" और यह भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानी जाती है। इस काव्य

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

संग्रह में 103 गाने होते हैं, जिनमें रवींद्रनाथ ठाकुर ने ईश्वर, मानवता, जीवन, प्रेम, और प्रकृति से जुड़ी गहरी चंताएं और वचार व्यक्त कए हैं।

यह काव्य संग्रह रवींद्रनाथ ठाकुर के दर्शन और उनकी आस्थाओं का प्रतिबिंब है, जिसमें वे ईश्वर से आत्मिक मलन और आत्म-साक्षात्कार की बात करते हैं। उनका लेखन मानवीय संवेदनाओं और भारतीय संस्कृति से गहरे जुड़ा हुआ है। 'गीतांज ल' ने रवींद्रनाथ ठाकुर को 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार दिलवाया था।

3. रवींद्रनाथ ठाकुर ने कलकता (कोलकाता) के निकट एक शिक्षण संस्थान की स्थापना की थी। पुस्तकालय की मदद से उसके वषय में जानकारी एकत्रित कीजिए ।

उत्तर 3- रवींद्रनाथ ठाकुर (रवींद्रनाथ ठाकुर या रवींद्रनाथ ठाकुर के नाम से प्रसिद्ध) ने शांति निकेतन नामक एक शिक्षण संस्थान की स्थापना की थी। यह संस्थान पश्चिम बंगाल के बोलपुर में स्थित है, जो कोलकाता से लगभग 160 किलोमीटर दूर है। शांति निकेतन की स्थापना 1901 में की गई थी और रवींद्रनाथ ठाकुर ने इसे एक अद्वितीय शिक्षा प्रणाली की जगह बनाने की दिशा में काम किया था, जिसमें कला, साहित्य, संगीत, और संस्कृति को प्राथमिकता दी जाती थी।

यह संस्थान परंपरागत शिक्षा पद्धतियों से हटकर विद्या र्थियों को एक खुली और समावेशी वातावरण में शिक्षा देने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था। शांति निकेतन में बच्चों को न केवल अकादमिक शिक्षा दी जाती थी, बल्कि उन्हें कला, संस्कृति और अन्य कलात्मक अभिव्यक्तियों में भी निपुण बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता था। रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपनी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से यह प्रयास किया कि छात्रों को पूरी दुनिया से जुड़ा हुआ महसूस हो और वे एक स्वतंत्र और रचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करें।

शांति निकेतन में स्थापित विश्व भारतीय विश्व विद्यालय (Visva-Bharati University) का यह मूल आधार था, और यह आज भी शिक्षा, कला, और संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र बना हुआ है।

4. रवींद्रनाथ ठाकुर ने अनेक गीत लिखे, जिन्हें आज भी गाया जाता है और उसे रवींद्र संगीत कहा जाता है। यदि संभव हो तो रवींद्र-संगीत संबंधी कैसेट व सी. डी. लेकर सुनिए ।

उत्तर 4- (छात्र स्वयं करें। आप इन्हें ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्म जैसे Spotify, YouTube, या अन्य डिजिटल माध्यमों पर भी पा सकते हैं।)

रवींद्रनाथ ठाकुर, जिन्हें रवींद्रनाथ ठाकुर के नाम से भी जाना जाता है, ने बंगाल में कविता, गीत, नाटक, और संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके द्वारा रचित गीतों को "रवींद्र संगीत" के नाम से जाना जाता है। यह गीत न केवल भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, बल्कि दुनिया भर में भी सुने और पसंद किए जाते हैं।

रवींद्र संगीत के गीतों में उनके जीवन, प्रकृति, देशभक्ति, और मानवीय संबंधों के गहरे वचार होते हैं। अगर आप इन गीतों का अनुभव करना चाहते हैं, तो आप कई तरह की कैसेट्स और सी.डी. के जरिए इन संगीतों को सुन सकते हैं, जो विभिन्न संग्रहणों में उपलब्ध हैं।

पाठ 7: रवींद्रनाथ ठाकुर (आत्मत्राण) पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर, भावार्थ

रवींद्रनाथ ठाकुर (आत्मत्राण) पर आधारित भावार्थ,

सारांश

रवींद्रनाथ ठाकुर की कविता "आत्मत्राण"

वपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं,
केवल इतना हो, करुणामय,
कभी न वपदा में पाऊँ भय।

दुःख-ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही,
पर इतना होवे, करुणामय,
दुःख को मैं कर सकूँ सदा जय।

कोई कहीं सहायक न मले,
तो अपना बल पौरुष न हिले;
हानि उठानी पड़े जगत् में, लाभ अगर वंचना रही,
तो भी मन में न मानूँ क्षय।

मेरा त्राण करो अनुदिन तुम, यह मेरी प्रार्थना नहीं,
बस इतना होवे, करुणामय,
तरने की हो शक्ति अनामय।

मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही,
केवल इतना रखना अनुनय,
वहन कर सकूँ इसको निर्भय।

नत शिर होकर सुख के दिन में,
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में;
दुःख-रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखल मही,
उस दिन ऐसा हो, करुणामय,
तुम पर करूँ न कुछ संशय।

अनुवाद: हजारीप्रसाद द्विवेदी

क वता: आत्मत्राण का भावार्थ

क व: रवींद्रनाथ ठाकुर

अनुवाद: हजारीप्रसाद द्विवेदी

भावार्थ : रवींद्रनाथ ठाकुर की क वता 'आत्मत्राण' एक उच्चकोटि की आध्यात्मिक प्रार्थना है, जिसमें क व ईश्वर से वप त्त्यों से बचाने की याचना नहीं करता, बल्कि कठिन समय में साहस, आत्मबल और सहनशक्ति की कामना करता है। वह चाहता है क दुःख और पीडा में भी उसका मन वच लत न हो, बल्कि वह उनका सामना निडरता से कर सके।

क व कहता है क वह ईश्वर से यह नहीं चाहता क वे उसे वपदाओं से दूर रखें। वह केवल इतनी कृपा चाहता है क जब संकट आए, तब उसका मन भयभीत न हो। दुःख और ताप जब जीवन में उपस्थित हों, तब वह उन्हें हरा सके, न क उनसे सांत्वना माँगे या भागे। यदि जीवन में कोई मदद के लए न हो, तब भी उसका आत्मबल कमजोर न पड़े और अगर लाभ के स्थान पर हानि हो, तब भी उसका वश्वास न डगमगाए।

क व दिन-प्रतिदिन ईश्वर से यह नहीं माँगता क वह उसे कष्टों से मुक्ति दें, बल्कि केवल यह चाहता है क उसे उन कष्टों को सहने की शक्ति प्राप्त हो। अगर जीवन का बोझ भारी हो जाए, तब ईश्वर उसे हल्का न करें, बल्कि उसे इतना मजबूत बनाएं क वह उसे निडरता से वहन कर सके।

सुख के दिनों में जब उसका सर वनम हो, तब वह ईश्वर का साक्षात्कार करे, और दुःख की रातों में यदि संसार उसका साथ छोड़ दे, तब भी उसका ईश्वर पर वश्वास बना रहे।

निष्कर्ष:

यह क वता हमें जीवन की चुनौतियों से भागने के बजाय उनका सामना करने की प्रेरणा देती है। यह एक आंतरिक जागरण की पुकार है, जिसमें आत्मबल, वश्वास और ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा को केंद्र में रखा गया है। रवींद्रनाथ ठाकुर का यह संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उनके समय में था।

आत्मत्राण – सारांश (Summary):

रवींद्रनाथ ठाकुर की क वता 'आत्मत्राण' एक आध्यात्मिक और प्रेरणादायक प्रार्थना है, जिसमें क व ईश्वर से कठिनाइयों से मुक्ति की नहीं, बल्कि उन्हें सहने और जीतने की शक्ति माँगता है। वह चाहता है क दुःख, संकट और असफलता के समय उसका आत्मबल बना रहे और वह निडर होकर वप त्त्यों का सामना कर सके। क व यह भी प्रार्थना करता है क सुख में अहंकार न आए और दुःख में ईश्वर पर वश्वास डगमगाए नहीं। यह क वता आत्मबल, साहस, आत्मनिर्भरता और ईश्वर में अटूट आस्था की प्रेरणा देती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: रवींद्रनाथ ठाकुर की क वता 'आत्मत्राण' में क व ईश्वर से क्या प्रार्थना करता है?

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर 'आत्मत्राण' क वता में ईश्वर से यह प्रार्थना नहीं करते क वे उन्हें वप तयों से बचाएं, बल्कि वे साहस, आत्मबल और दुःख सहने की शक्ति माँगते हैं। क व वप तयों का निडरता से सामना करना चाहता है और ईश्वर से केवल इतना चाहता है क उसका मन कभी भयभीत न हो। यह क वता आत्मनिर्भरता की प्रेरणा देती है।

प्रश्न 2: 'आत्मत्राण' क वता में क व का ईश्वर से क्या वशेष आग्रह है?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर 'आत्मत्राण' में ईश्वर से यह वशेष आग्रह करते हैं क जीवन में चाहे कतनी भी कठिनाइयाँ आएँ, वे उनका सामना आत्मबल और धैर्य से कर सकें। क व सहायता की अपेक्षा नहीं करता, बल्कि वप तयों में डटे रहने की शक्ति चाहता है। यह भावना उन्हें महान बनाती है और क वता को एक प्रेरणादायक रूप देती है।

प्रश्न 3: रवींद्रनाथ ठाकुर की क वता 'आत्मत्राण' में आत्मबल का क्या महत्व है?

उत्तर: 'आत्मत्राण' में रवींद्रनाथ ठाकुर आत्मबल को सर्वोच्च मानते हैं। वे वप तयों से बचने की प्रार्थना नहीं करते, बल्कि उन्हें सहन करने और उनसे लड़ने की शक्ति माँगते हैं। उनका मानना है क यदि आत्मबल मजबूत हो, तो कोई भी परिस्थिति डगमगा नहीं सकती। यह संदेश आज के जीवन में भी अत्यंत प्रासंगिक है।

प्रश्न 4: 'आत्मत्राण' क वता हमें क्या प्रेरणा देती है?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर की 'आत्मत्राण' क वता हमें यह प्रेरणा देती है क हमें जीवन की कठिनाइयों से डरना नहीं चाहिए, बल्कि उनका साहस के साथ सामना करना चाहिए। यह क वता बताती है क ईश्वर से सहायता की अपेक्षा करने की बजाय आत्मबल और धैर्य की याचना करनी चाहिए। यह आत्म वश्वास और ईश्वर में श्रद्धा का अद्भुत संगम है।

प्रश्न 5: रवींद्रनाथ ठाकुर के अनुसार दुःख में क्या होना चाहिए?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर के अनुसार दुःख की घड़ी में व्यक्ति को ईश्वर से सांत्वना की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। बल्कि, उसे इतना मजबूत बनना चाहिए क वह दुःखों को झेल सके और उन पर वजय प्राप्त कर सके। क व की यह भावना मनुष्य को आत्मनिर्भर और निडर बनने की प्रेरणा देती है।

प्रश्न 6: आत्मत्राण क वता में 'करुणामय' शब्द का क्या महत्व है?

उत्तर: 'करुणामय' शब्द रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा ईश्वर को संबोधित करने का माध्यम है, जिससे उनकी श्रद्धा झलकती है। यह शब्द दर्शाता है क क व ईश्वर को करुणा और दया का प्रतीक मानते हैं। वह ईश्वर से दुख हटाने की प्रार्थना नहीं करते, बल्कि दुख सहने की शक्ति देने की याचना करते हैं। यह शब्द क वता में भावनात्मक गहराई जोड़ता है।

प्रश्न 7: आत्मत्राण क वता में 'त्राण' का क्या अर्थ है?

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

उत्तर: 'त्राण' का अर्थ होता है - उद्धार या रक्षा। रवींद्रनाथ ठाकुर 'आत्मत्राण' क वता में आत्मा की रक्षा की बात करते हैं। वे चाहते हैं क ईश्वर उनके मन को इतना दृढ़ बना दे क वह वप तयों में भी डगमगाए नहीं। वे आत्मबल को उद्धार का माध्यम मानते हैं, न क कसी बाहरी सहायता को।

प्रश्न 8: रवींद्रनाथ ठाकुर वप त के समय में कैसा व्यवहार करना सखाते हैं?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर वप त के समय भागने या डरने के बजाय उसका सामना करने की सीख देते हैं। वे चाहते हैं क मनुष्य का मन इतना दृढ़ हो क वह अकेले भी कठिनाइयों का सामना कर सके। वे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं क उनका आत्मबल न डगमगाए, चाहे कतना भी बड़ा संकट क्यों न आ जाए।

प्रश्न 9: आत्मत्राण क वता में रवींद्रनाथ ठाकुर का ईश्वर के प्रति वश्वास कैसा है?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर का ईश्वर के प्रति अटूट और गहरा वश्वास है। वे कठिन परिस्थितियों में भी ईश्वर पर संदेह नहीं करते। वे चाहते हैं क दुख और कठिनाई के समय में भी उनका मन ईश्वर की ओर से न हटे। यह वश्वास उनकी आध्यात्मिक गहराई को दर्शाता है।

प्रश्न 10: रवींद्रनाथ ठाकुर का जीवन-दर्शन आत्मत्राण क वता में कैसे झलकता है?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर का जीवन-दर्शन आत्मत्राण में पूरी तरह से झलकता है। वे आत्मनिर्भरता, साहस, और ईश्वर में अ डग वश्वास को जीवन का मूल मंत्र मानते हैं। वे व्यक्ति को प्रेरित करते हैं क वह संकट में भी ईश्वर को याद करे और भय रहित होकर जीवन जिए। यह क वता उनके गहरे आध्यात्मिक चंतन को व्यक्त करती है।

प्रश्न 11: रवींद्रनाथ ठाकुर की 'आत्मत्राण' क वता आज के युवाओं के लए कैसे प्रेरणादायक है?

उत्तर: आज के युवाओं को जीवन में अनेक चुनौतियाँ मलती हैं। रवींद्रनाथ ठाकुर की 'आत्मत्राण' क वता उन्हें बताती है क वे इन समस्याओं से भागें नहीं, बल्कि उनका साहस के साथ सामना करें। आत्मबल, निडरता और ईश्वर में वश्वास से वे हर कठिनाई को पार कर सकते हैं। यह क वता युवाओं को मान सक रूप से सशक्त बनाती है।

प्रश्न 12: 'आत्मत्राण' क वता में क व का दृष्टिकोण कस प्रकार आध्यात्मिक है?

उत्तर: 'आत्मत्राण' में रवींद्रनाथ ठाकुर का दृष्टिकोण अत्यंत आध्यात्मिक है। वे ईश्वर से केवल कृपा या भौतिक सुख की मांग नहीं करते, बल्कि आत्मबल और संयम की शक्ति चाहते हैं। यह भावना दर्शाती है क वे आत्मा की उन्नति और आंतरिक शांति को ही सर्वोच्च मानते हैं।

प्रश्न 13: रवींद्रनाथ ठाकुर के अनुसार सच्ची प्रार्थना क्या होती है?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर के अनुसार सच्ची प्रार्थना वह है, जिसमें हम ईश्वर से कठिनाइयों को हटाने की नहीं, बल्कि उन्हें सहने की शक्ति माँगते हैं। वे 'आत्मत्राण' क वता में यही संदेश देते हैं क मनुष्य को अपने दुखों का सामना स्वयं करना चाहिए और ईश्वर से आत्मबल की प्रार्थना करनी चाहिए।

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

प्रश्न 14: 'आत्मत्राण' क वता में रवींद्रनाथ ठाकुर की भाषा शैली कैसी है?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर की 'आत्मत्राण' क वता की भाषा भावपूर्ण, सरल और प्रभावशाली है। वे करुणा, वश्वास और साहस को शब्दों में इस तरह परोते हैं क पाठक उनसे जुड जाता है। क वता का स्वर वनम और आत्मीय है, जो उसे और भी प्रभावशाली बनाता है।

प्रश्न 15: आत्मत्राण क वता में "नत शर होकर सुख के दिन" पंक्ति का क्या भाव है?

उत्तर: इस पंक्ति में रवींद्रनाथ ठाकुर कहते हैं क जब जीवन में सुख के दिन आए, तब भी व्यक्ति को वनम और श्रद्धावान रहना चाहिए। सुख में अहंकार नहीं आना चाहिए और ईश्वर को हर क्षण याद करना चाहिए। यह पंक्ति जीवन में संतुलन बनाए रखने की शक्षा देती है।

प्रश्न 16: रवींद्रनाथ ठाकुर के काव्य में आत्म वश्वास कैसे झलकता है?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर की क वता 'आत्मत्राण' आत्म वश्वास की मसाल है। वे वप त से घबराने की बजाय उसमें लडने का साहस दिखाते हैं। वे कसी सहारे की आवश्यकता नहीं जताते, बल्कि स्वयं को मजबूत बनाने की बात करते हैं। उनका यही आत्म वश्वास पाठकों को प्रेरित करता है।

प्रश्न 17: रवींद्रनाथ ठाकुर की 'आत्मत्राण' क वता का केंद्रीय भाव क्या है?

उत्तर: 'आत्मत्राण' का केंद्रीय भाव है - कठिनाइयों में आत्मबल और ईश्वर में अ डग श्रद्धा। रवींद्रनाथ ठाकुर वप त्यों से मुक्ति की नहीं, उन्हें सहने की शक्ति की प्रार्थना करते हैं। वे आत्मबल, धैर्य और साहस को जीवन की सबसे बडी पूंजी मानते हैं।

प्रश्न 18: आत्मत्राण क वता में क व कस प्रकार निर्भय बनने की प्रेरणा देता है?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर 'आत्मत्राण' में स्पष्ट कहते हैं क कोई सहायता न हो तब भी हमें निर्भय रहना चाहिए। वे वप त्यों से भागने की बजाय उनका सामना करने का हौसला देते हैं। उनका यह संदेश हर पाठक को आत्मबल की शक्ति से परि चत कराता है।

प्रश्न 19: आत्मत्राण क वता में क व क्या जीवन मूल्य सखाते हैं?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर 'आत्मत्राण' क वता के माध्यम से आत्मबल, धैर्य, निडरता, वनमता और ईश्वर में वश्वास जैसे जीवन-मूल्य सखाते हैं। वे बताते हैं क सच्ची सफलता वही है, जो कठिनाइयों से लडकर पाई जाए। यह क वता मनुष्य को मान सक रूप से सशक्त बनाती है।

प्रश्न 20: रवींद्रनाथ ठाकुर की आत्मत्राण क वता का आज के सामाजिक जीवन में क्या महत्व है?

उत्तर: आज के सामाजिक जीवन में जहां चुनौतियाँ और तनाव बढ़ते जा रहे हैं, वहाँ रवींद्रनाथ ठाकुर की 'आत्मत्राण' क वता आत्मबल और आस्था की प्रेरणा देती है। यह क वता बताती है क कठिन परिस्थितियों में भी आत्मबल और ईश्वर में वश्वास हमें डगमगाने नहीं देता। यह एक मार्गदर्शक रचना है जो समाज को साहसी बनाती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: रवींद्रनाथ ठाकुर कौन थे?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर एक प्रसिद्ध भारतीय कवि, लेखक, संगीतकार और चित्रकार थे। वे नोबेल पुरस्कार जीतने वाले पहले एशियाई व्यक्ति थे। उन्होंने 'जन गण मन' की रचना की और भारतीय साहित्य को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई।

प्रश्न 2: रवींद्रनाथ ठाकुर को नोबेल पुरस्कार क्यों मिला?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर को 1913 में उनकी काव्य रचना 'गीतांजल' के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। उनकी कविताओं में आध्यात्मिकता, प्रकृति प्रेम और मानवीय संवेदना का सुंदर समावेश है, जिससे वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहे गए।

प्रश्न 3: रवींद्रनाथ ठाकुर की शिक्षा कहाँ हुई?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर की प्रारंभिक शिक्षा घर पर हुई। बाद में वे इंग्लैंड गए, जहाँ उन्होंने कुछ समय तक लॉ की पढ़ाई की, लेकिन वे साहित्य में अधिक रुचि रखते थे, इसलिए पढ़ाई अधूरी छोड़ दी।

प्रश्न 4: रवींद्रनाथ ठाकुर का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर का जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता के एक संपन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका परिवार सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों में अग्रणी था, जिसने उनके व्यक्तित्व को गहराई दी।

प्रश्न 5: 'गीतांजल' क्या है?

उत्तर: 'गीतांजल' रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखित कविता-संग्रह है, जिसमें भक्ति और मानवता की भावना गहराई से प्रकट होती है। इस संग्रह के लिए उन्हें 1913 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रश्न 6: रवींद्रनाथ ठाकुर ने कौन से राष्ट्रीय गीत की रचना की?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर ने भारत के राष्ट्रीय गान 'जन गण मन' की रचना की। यह गीत भारतीय एकता और वधता का सुंदर प्रतीक है। उन्होंने बांग्लादेश के राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बांग्ला' की रचना भी की।

प्रश्न 7: रवींद्रनाथ ठाकुर का साहित्यिक योगदान क्या है?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर ने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और गीतों में योगदान दिया। उनकी रचनाएँ भारतीय संस्कृति, प्रकृति और आत्मा की अभिव्यक्ति हैं। वे बंगाली साहित्य को वैश्विक पहचान देने वाले साहित्यकार थे।

प्रश्न 8: रवींद्रनाथ ठाकुर को 'गुरुदेव' क्यों कहा जाता है?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर को उनकी विद्वता, वचारीलता और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए 'गुरुदेव' कहा गया। महात्मा गांधी ने उन्हें यह उपाधि दी थी। वे विद्यार्थियों के प्रेरणास्रोत माने जाते हैं।

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

प्रश्न 9: शांतिनिकेतन की स्थापना कसने की?

उत्तर: शांतिनिकेतन की स्थापना रवींद्रनाथ ठाकुर ने की थी। यह एक शैक्षणिक संस्थान है जहाँ प्रकृति के बीच रचनात्मक शिक्षा दी जाती है। बाद में यही संस्था 'वश्वभारती विश्व विद्यालय' में परिवर्तित हुई।

प्रश्न 10: रवींद्रनाथ ठाकुर का संगीत में क्या योगदान था?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर ने हजारों गीतों की रचना की, जिन्हें 'रवींद्र संगीत' कहा जाता है। इन गीतों में भावनाओं, प्रकृति और भक्ति का सुंदर समावेश होता है। उनका संगीत आज भी लोगों के हृदय में बसता है।

प्रश्न 11: रवींद्रनाथ ठाकुर ने कौन-कौन सी भाषाओं में लिखा?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर ने मुख्य रूप से बंगाली में लिखा, लेकिन उन्होंने कई रचनाएँ अंग्रेजी में भी अनुवादित कीं। उनकी अंग्रेजी रचनाओं ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई और नोबेल पुरस्कार भी इसी के लिए मिला।

प्रश्न 12: रवींद्रनाथ ठाकुर का विचार शिक्षा के बारे में क्या था?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर शिक्षा को प्रकृति से जुड़ी, रचनात्मक और स्वतंत्रता आधारित मानते थे। वे rote learning के विरोधी थे और मानते थे कि बच्चों को खुली हवा में सीखने का अवसर मिलना चाहिए।

प्रश्न 13: रवींद्रनाथ ठाकुर की प्रमुख कहानियाँ कौन सी हैं?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर की प्रमुख कहानियों में 'काबुलीवाला', 'अतिथि', 'समाप्ति', और 'द्रष्टा' प्रमुख हैं। इन कहानियों में मानवीय संवेदना और सामाजिक यथार्थ का सुंदर चित्रण मिलता है।

प्रश्न 14: रवींद्रनाथ ठाकुर की मृत्यु कब हुई?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर का निधन 7 अगस्त 1941 को कोलकाता में हुआ। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम दिनों में भी साहित्य और कला से जुड़ाव बनाए रखा।

प्रश्न 15: क्या रवींद्रनाथ ठाकुर चित्रकार भी थे?

उत्तर: हाँ, रवींद्रनाथ ठाकुर एक प्रतिभाशाली चित्रकार भी थे। उन्होंने जीवन के उत्तरार्ध में चित्रकला में रुचि ली और कई अनोखी चित्रकलाएँ बनाईं जो आज भी संग्रहालयों में संरक्षित हैं।

प्रश्न 16: रवींद्रनाथ ठाकुर की विचारधारा क्या थी?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर मानवतावादी विचारधारा के समर्थक थे। वे विश्व बंधुत्व, शांति, शिक्षा और स्वतंत्रता में विश्वास रखते थे। उन्होंने धर्म, जाति और राष्ट्र की सीमाओं से ऊपर उठकर सोचना सिखाया।

प्रश्न 17: रवींद्रनाथ ठाकुर और महात्मा गांधी के संबंध कैसे थे?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर और महात्मा गांधी एक-दूसरे का बहुत सम्मान करते थे। ठाकुर गांधीजी को 'महात्मा' कहकर पुकारते थे और गांधीजी उन्हें 'गुरुदेव'। दोनों के विचार भिन्न होते हुए भी वे एक-दूसरे के पूरक थे।

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

प्रश्न 18: रवींद्रनाथ ठाकुर की प्रसिद्ध उपन्यास कौन से हैं?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर के प्रसिद्ध उपन्यासों में 'गोरा', 'घरे बाहिरे' (The Home and the World), और 'चोखेर बाली' प्रमुख हैं। इन उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक विचारधारा का सुंदर चित्रण मिलता है।

प्रश्न 19: 'रवींद्र संगीत' क्या है?

उत्तर: 'रवींद्र संगीत' रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित गीतों को कहा जाता है। इनमें भक्ति, प्रेम, प्रकृति और दर्शन की झलक मिलती है। ये गीत आज भी बंगाल और भारत में अत्यधिक लोकप्रिय हैं।

प्रश्न 20: रवींद्रनाथ ठाकुर की रचनाओं में प्रकृति का क्या स्थान है?

उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर की रचनाओं में प्रकृति एक जीवंत पात्र के रूप में प्रस्तुत होती है। उनकी कविताओं, गीतों और कहानियों में प्रकृति से गहरा लगाव झलकता है, जिससे पाठकों को भी आत्मिक आनंद मिलता है।

बहु वकल्पीय प्रश्न (MCQs)

प्रश्न 1: रवींद्रनाथ ठाकुर को नोबेल पुरस्कार किस काव्य-संग्रह के लिए मिला था?

- A) गोरा
- B) गीतांजलि
- C) चोखेर बाली
- D) घरे बाहिरे

उत्तर: **B) गीतांजलि**

प्रश्न 2: रवींद्रनाथ ठाकुर किस वर्ष नोबेल पुरस्कार से सम्मानित हुए थे?

- A) 1905
- B) 1920
- C) 1913
- D) 1941

उत्तर: **C) 1913**

प्रश्न 3: रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखित भारत का राष्ट्रीय गान कौन-सा है?

- A) वंदे मातरम्
- B) सारे जहाँ से अच्छा
- C) जन गण मन
- D) जय हिंद

उत्तर: **C) जन गण मन**

प्रश्न 4: रवींद्रनाथ ठाकुर का जन्म किस स्थान पर हुआ था?

- A) शांतिनिकेतन

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

- B) मुम्बई
- C) कोलकाता
- D) ढाका

उत्तर: C) कोलकाता

प्रश्न 5: 'शांति निकेतन' की स्थापना कसने की थी?

- A) महात्मा गांधी
- B) सुभाष चंद्र बोस
- C) रवींद्रनाथ ठाकुर
- D) दयानंद सरस्वती

उत्तर: C) रवींद्रनाथ ठाकुर

प्रश्न 6: रवींद्रनाथ ठाकुर ने कस देश के लए भी राष्ट्रगान लखा?

- A) नेपाल
- B) श्रीलंका
- C) बांग्लादेश
- D) पा कस्तान

उत्तर: C) बांग्लादेश

प्रश्न 7: रवींद्रनाथ ठाकुर की प्रमुख कहानी 'काबुलीवाला' कस भाव से जुडी है?

- A) देशभक्ति
- B) व्यापार
- C) प्रेम और मानवीय संबंध
- D) शक्षा

उत्तर: C) प्रेम और मानवीय संबंध

प्रश्न 8: रवींद्रनाथ ठाकुर को कस उपा ध से सम्मानित कया गया था?

- A) राष्ट्र पता
- B) गुरुदेव
- C) क वराज
- D) आचार्य

उत्तर: B) गुरुदेव

प्रश्न 9: रवींद्रनाथ ठाकुर कस प्रकार की शक्षा के समर्थक थे?

- A) पाठ्यक्रम आधारित
- B) रटंत प्रणाली
- C) प्रकृति आधारित रचनात्मक शक्षा

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

D) परीक्षा केंद्रित

उत्तर: C) प्रकृति आधारित रचनात्मक शिक्षा

प्रश्न 10: रवींद्रनाथ ठाकुर का निधन कब हुआ था?

A) 7 मई 1861

B) 7 अगस्त 1941

C) 26 जनवरी 1950

D) 15 अगस्त 1947

उत्तर: B) 7 अगस्त 1941

प्रश्न 11: रवींद्रनाथ ठाकुर की कस रचना को अंग्रेजी में अनुवादित कर अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्ध मली?

A) गोरा

B) घरे बाहिरे

C) गीतांजलि

D) चोखेर बाली

उत्तर: C) गीतांजलि

प्रश्न 12: रवींद्रनाथ ठाकुर की रचनाओं में कौन-सा विषय प्रमुख होता है?

A) विज्ञान

B) राजनीति

C) प्रकृति और मानवता

D) खेल

उत्तर: C) प्रकृति और मानवता

प्रश्न 13: रवींद्रनाथ ठाकुर ने शिक्षा के लिए कौन-सा विश्व विद्यालय स्थापित किया?

A) काशी विश्वविद्यालय

B) विश्वभारती विश्व विद्यालय

C) अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय

D) बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय

उत्तर: B) विश्वभारती विश्व विद्यालय

प्रश्न 14: रवींद्रनाथ ठाकुर की चित्रकला कस काल में विकसित हुई?

A) बचपन में

B) युवावस्था में

C) जीवन के अंतिम वर्षों में

D) विदेश यात्रा के दौरान

उत्तर: C) जीवन के अंतिम वर्षों में

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

प्रश्न 15: रवींद्रनाथ ठाकुर ने अंग्रेज़ी में कसने गीतांज ल का अनुवाद कया था?

- A) स्वयं ठाकुर ने
- B) महात्मा गांधी ने
- C) र वशंकर ने
- D) स्वामी ववेकानंद ने

उत्तर: A) स्वयं ठाकुर ने

प्रश्न 16: 'घरे बाहिरे' उपन्यास का केंद्रीय वषय कया है?

- A) युद्ध
- B) देशभक्ति और स्त्री स्वातंत्र्य
- C) हास्य
- D) वज्ञान

उत्तर: B) देशभक्ति और स्त्री स्वातंत्र्य

प्रश्न 17: कस उपन्यास में रवींद्रनाथ ठाकुर ने गौरा नामक पात्र की रचना की?

- A) गौरा
- B) चोखेर बाली
- C) शेषेर क वता
- D) योगायोग

उत्तर: A) गौरा

प्रश्न 18: रवींद्रनाथ ठाकुर का संबंध कस भाषा-साहित्य से था?

- A) हिंदी
- B) संस्कृत
- C) बंगाली
- D) उर्दू

उत्तर: C) बंगाली

प्रश्न 19: रवींद्रनाथ ठाकुर के कस गीत संग्रह को अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई?

- A) सोनार तारी
- B) गीतांज ल
- C) बालाका
- D) कलपना

उत्तर: B) गीतांज ल

प्रश्न 20: रवींद्रनाथ ठाकुर के अनुसार शक्षा का उद्देश्य कया होना चाहिए?

- A) नौकरी पाना
- B) प्रतियो गता जीतना

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

C) आत्म- वकास और सोच का वकास

D) वदेशी भाषा सीखना

उत्तर: C) आत्म- वकास और सोच का वकास

'आत्मत्राण' पाठ पर आधारित प्रश्न True or False (सही या गलत)

1. रवींद्रनाथ ठाकुर की 'आत्मत्राण' क वता में क व वपदाओं से बचने की प्रार्थना करता है।

उत्तर: गलत

2. 'आत्मत्राण' में क व वप त में साहस और शक्ति की कामना करता है।

उत्तर: सही

3. क व चाहता है क संकट आने पर उसे भय महसूस न हो।

उत्तर: सही

4. 'आत्मत्राण' क वता में क व ने केवल सांत्वना की प्रार्थना की है।

उत्तर: गलत

5. रवींद्रनाथ ठाकुर इस क वता में आत्मबल और निर्भयता को महत्व देते हैं।

उत्तर: सही

6. क व कहता है क दुखों को सहकर उनसे जीतने की शक्ति दी जाए।

उत्तर: सही

7. 'आत्मत्राण' का भाव आत्मसमर्पण की भावना को दर्शाता है।

उत्तर: गलत

8. क व चाहता है क कठिनाई में उसका साहस कम न हो।

उत्तर: सही

9. रवींद्रनाथ ठाकुर ने इस क वता में ईश्वर से सदा सुख देने की प्रार्थना की है।

उत्तर: गलत

10. आत्मत्राण में क व वप त्यों को जीवन का आवश्यक अंग मानते हैं।

उत्तर: सही

11. 'आत्मत्राण' क वता में सहायता की बजाय आत्मनिर्भरता पर जोर दिया गया है।

उत्तर: सही

12. क वता में यह कहा गया है क यदि कोई साथ न दे तो भी पौरुष डगमगाए नहीं।

उत्तर: सही

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

13. क व अपने दुखों को दूसरों पर टालना चाहता है।
उत्तर: गलत
14. 'आत्मत्राण' में क व दुखों से भागने की बात करता है।
उत्तर: गलत
15. रवींद्रनाथ ठाकुर की यह क वता मनोबल को मजबूत करने वाली है।
उत्तर: सही
16. क वता में क व का ईश्वर पर पूर्ण वश्वास झलकता है।
उत्तर: सही
17. रवींद्रनाथ ठाकुर ने यह क वता अपनी बाल्यावस्था में लखी थी।
उत्तर: गलत
18. 'आत्मत्राण' क वता का अनुवाद हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कया है।
उत्तर: सही
19. क व वप त में भी तव मुख पहचानने की बात करता है।
उत्तर: सही
20. 'आत्मत्राण' क वता केवल धार्मिक उपदेशों पर आधारित है।
उत्तर: गलत

रिक्त स्थान भरिए –रवींद्रनाथ ठाकुर (आत्मत्राण) पर आधारित

- 'आत्मत्राण' क वता के रचयिता _____ हैं।
उत्तर: रवींद्रनाथ ठाकुर
- रवींद्रनाथ ठाकुर वप त में ईश्वर से _____ की प्रार्थना करते हैं।
उत्तर: साहस
- क व ने वपदाओं से बचाने की जगह _____ शक्ति माँगी है।
उत्तर: सहने और जीतने की
- क वता में क व _____ और निर्भयता का संदेश देता है।
उत्तर: आत्मबल
- रवींद्रनाथ ठाकुर वप त में भी _____ नहीं खोने की बात करते हैं।
उत्तर: आत्म वश्वास

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

- क वता में क व दुख को _____ करने की शक्ति चाहता है।
उत्तर: जय / परास्त
- क व चाहता है क दुख की घड़ी में उसका मन _____ न हो।
उत्तर: वच लत
- 'आत्मत्राण' क वता का अनुवाद _____ ने किया है।
उत्तर: हज़ारी प्रसाद द् ववेदी
- क व वप तयों को जीवन की _____ मानते हैं।
उत्तर: परीक्षा
- रवींद्रनाथ ठाकुर की यह क वता _____ को प्रेरित करती है।
उत्तर: आत्मनिर्भरता
- क व चाहता है क दुख सहते हुए भी वह _____ बना रहे।
उत्तर: निर्भय
- यदि सहायता न मले, तो भी अपना _____ न डगमगाए।
उत्तर: पौरुष / आत्मबल
- क व सुख के दिनों में भी ईश्वर का _____ चाहता है।
उत्तर: साक्षात्कार
- क वता में वप त को _____ रूप में स्वीकार किया गया है।
उत्तर: जीवन के अंग
- क व ने ईश्वर से _____ की नहीं, साहस की माँग की है।
उत्तर: सांत्यना
- 'आत्मत्राण' क वता में जीवन की कठिनाइयों का _____ वर्णन है।
उत्तर: सकारात्मक
- रवींद्रनाथ ठाकुर की यह क वता _____ को चुनौती देती है।
उत्तर: कमजोरी / डर
- क वता में क व ने बल की नहीं, _____ की माँग की है।
उत्तर: आत्मबल
- क व वप तयों से _____ नहीं, बल्कि उनका सामना करना चाहता है।
उत्तर: भागना

Ncert Solutions of Chapter 7 Rabindranath Tagore (Self-realization)

- 'आत्मत्राण' का मुख्य उद्देश्य है पाठक को _____ बनाना।
उत्तर: आत्मनिर्भर और साहसी